ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

कालिदास के नाटकों में प्रतिबन्धित प्राकृतिक सौंदर्य

Dr. Saroj Meena

Associate Professor, Dept. of Sanskrit, B.S.R. Government Arts College, Alwar, Rajasthan, India

सार

कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, उनकी काव्य शक्ति और प्रतिभा के कारण, उन्हें कविकुल गुरु की उपाधि से सम्मानित किया गया है। वास्तव में, कालिदास संस्कृत साहित्य के मणिमाला का माध्यम है। पश्चिमी और भारतीय, प्राचीन और प्राचीन विद्वानों की दृष्टि में कालिदास सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय कवि हैं।

अन्य कवियों की तुलना में उनकी बहुमुखी प्रतिभा उन्हें विशिष्टता प्रदान करती है। कुछ विद्वान उन्हें ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में सिद्ध करते हैं, जबकि छठी शताब्दी ईस्वी में, अधिकांश विद्वानों के अनुसार, कालिदास का जन्म उज्जयिनी में हुआ था और वे शैव धर्मवल्मी थे। अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि कालिदास गुप्त कवि थे और गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समकालीन थे। इस लेख में, हम संस्कृत के महान कवि कालिदास के जीवन परिचय, जीवनी, साहित्य, काव्य सौंदर्य और समाजशास्त्रीय तत्वों के बारे में अध्ययन करेंगे, इसलिए शोध पत्र में हम कालिदास के कार्यों और साहित्य में उनके योगदान का अध्ययन कर रहे हैं। यदि आप कभी किसी हरे भरे मैदान, उद्यान, नदियों अथवा पहाड़ों के निकट गए हैं, तो आपने इन सभी में निहित चिर शांति का अनुभव अवश्य किया होगा। वास्तव में, प्रकृति के निकट जाने पर मनुष्य का मन, अत्यंत प्रफुल्लित इसलिए हो जाता है क्योंकि, मनुष्य प्रकृति से पूरी तरह सामंजस्य में है! हम प्रकृति से बिल्कुल भी अलग नहीं है, बल्कि अपने आप में हम प्रकृति ही हैं। हम प्रकृति का एक अभिन्न हिस्सा हैं और इस तथ्य को आदि कवि के नाम से विख्यात "कालिदास" ने विस्तार से वर्णित किया है।

कालिदास, संस्कृत साहित्य के सबसे महान कवि माने जाते हैं। कालिदास का अर्थ "काली का सेवक (कल्याः दासः)" होता है। कालिदास के लेखन में उनके सौंदर्य निरूपण की कला, भाव की कोमलता और कल्पना की समृद्धि की जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी कम है। कालिदास को उनकी रचना 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के लिए अत्यंत सम्मान तथा प्रसंशा प्राप्त हुई है। कालिदास के इस नाटक को लाखों भारतीयों और विदेशियों ने बहुत सराहा है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

परिचय

कालीदास की जन्मस्थली को लेकर भी विवाद है। मेघदूतम् में उज्जैन के प्रति उनके विशेष प्रेम को देखकर कुछ लोग उन्हें उज्जैन का निवासी मानते हैं। लेखकों ने यह साबित करने की भी कोशिश की है कि कालिदास का जन्म उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले के कविल्ठा गाँव में हुआ था। कालिदास ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा यहाँ प्राप्त की और यहाँ उन्होंने मेघदूत, कुमारसंभव और रघुवंश जैसे महाकाव्यों की रचना की। कविल्ठा चारधाम यात्रा मार्ग पर गुप्तकाशी में स्थित है। गुप्तकाशी से कालीमठ सिद्धपीठ के रास्ते पर, कालीमठ मंदिर से चार किलोमीटर आगे कवेल्थ गाँव स्थित है। कवीलथा में, सरकार ने कालिदास की एक मूर्ति भी स्थापित की है और एक सभागार का निर्माण किया है जहाँ हर साल जून के महीने में तीन दिनों के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया जाता है, जिसमें देश भर के विद्वान भाग लेते हैं।[1]
कालिदास के रहने के कुछ प्रमाण बिहार के मधुबनी जिले में भी मिलते हैं। कहा जाता है कि विदोत्तमा (कालीदास की पत्नी) को बहस में हराने के बाद, कालिदास यहां गुरुकुल में रुके थे। कालिदास को यहां परमात्मा से ज्ञान का वरदान मिला था। आज भी, कालीदास की दीह यहाँ आयोजित की जाती है। मिट्टी से बच्चों के पहले अक्षर लिखने की परंपरा अभी भी यहां प्रचलित है।
कुछ विद्वानों ने उन्हें बंगाल और उड़ीसा में भी सिद्ध करने की कोशिश की है। ऐसा कहा जाता है कि कालिदास की श्रीलंका में हत्या कर दी गई थी, लेकिन विद्वान भी इसे काल कल्पित मानते हैं।

पंडित जयदेव कालिदास को 'कविकुलगुरु' कहते हैं, जिसका अर्थ “कवियों का गुरु” होता है। उनकी कविताओं से प्रतीत होता है कि कालिदास को कोमल पक्ष का स्वभाव बेहद प्रिय है। उन्होंने अपनी रचनाओं में शांतिपूर्ण आश्रमों, सुंदर उद्यानों, सुंदर महलों, गायन पक्षियों, भिनभिनाती मधुमक्खी और कोयल आदि प्राकृतिक पक्षों का प्रचुरता से उल्लेख किया है। कवि ने अपने नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् में प्रकृति का वर्णन करते हुए कहा है-

“सुभागसलीलावगाः पातालसंसारगसुरभिवानवताः/
प्रच्छायसुलभनिद्र दिवसः परिणामारमणियाः//”
अर्थात दिन में नहाना सुखदायी होता है, वन से आने वाली वायु अति सुगन्धित हो जाती है और घनी छाँव में निंद्रा अनायास ही आ जाती है। कालिदास एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और जिनकी प्रतिभाओं को साहित्य जगत में पूरी तरह से पहचाना और सराहा भी गया है। उनकी साहित्यिक कृतियों ने अमेरिका और एशिया के विद्वानों तथा प्राच्यविदों को भी आकर्षित किया है। उनकी काव्य प्रतिभाएँ संस्कृत कविता को परिष्कार, निरंतर स्पष्टता और अत्यधिक छायांकन के बिना ही शीर्ष पर ले जाती हैं। कालिदास की अभिव्यक्ति क्षमता भी अत्यंत सरल और अप्रभावित होती है।[2]

विचार-विमर्श

महाकवि कालिदास के निम्नलिखित सात काव्य ग्रंथ है, जिनकी प्रमाणिकता को सभी विद्वानों ने स्वीकृति प्रदान की हैं। ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव, रघुवंश, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्यवशियम् तथा अभिज्ञानशाकुन्तल - इनमें प्रथम दो गीति काव्य हैं, तृतीय तथा चतुर्थ महाकाव्य हैं तथा अंतिम तीन नाटक हैं। इन कृतियों का संक्षेप वर्णन इस प्रकार है।

यह कालिदास की सर्वप्रथम कृति हैं. यह गीतिकाव्य है जिसमें षडऋतुओं का छः सर्गों में वर्णन हैं. ऋतुओं का वर्णन प्रायः उद्दीपन रूप में हुआ हैं।[3]
मेघदूत :-
ऋतु संहार की अपेक्षा यह एक बड़ी रचना हैं. यह एक गीतिप्रधान खंड काव्य हैं. इसमें कुबेर के शाप से रामगिरी में निर्वासित एक यक्ष वर्षा ऋतु आने पर मेघ के द्वारा अपनी अलका प्रवासिनी प्रिया को संदेश भेजता हैं. इसके दो खंड हैं पूर्व मेघ तथा उत्तर मेघ। भाव पक्ष व कला पक्ष दोनों द्रष्टियों से यह एक उच्च श्रेणी का काव्य हैं. इसमें वियोग श्रृंगार रस है, फिर भी नैतिकता की शिष्टता काव्य में सर्वत्र है. पूर्व मेघ में प्रकृति के मनोरम दृश्यों का आकर्षक चित्रण है तथा उत्तर मेघ सौन्दर्य और

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

प्रेम के चित्रण से भरा हुआ हैं. भावाभिव्यंजना तथा प्राकृतिक सौन्दर्य की द्रष्टि से यह अत्यंत ही सुंदर काव्य हैं.

कुमारसंभव :-

यह एक महाकाव्य हैं. इस महाकाव्य में पार्वती विवाह, कुमार जन्म, तारकासुर वध की कथा प्रमुख हैं, शेष प्रासंगिक कथायें हैं. इस महाकाव्य में 17 सर्ग हैं. परन्तु कुछ विद्वान् इनमें से प्रथम आठ को ही प्रमाणिक मानते हैं, शेष सर्गों को विद्वानों द्वारा बाद में जोड़ा हुआ माना गया हैं.

उदात्त, सरस एवं कोमल भावाभिव्यक्ति, स्वाभाविक एवं मंजुल कल्पनाएँ, कोमलकांत पदावली, अलंकारों का सहज स्वाभाविक प्रयोग, प्रकृति का सुरम्य चित्रण, तप, समाधि, संयोग, वियोग आदि का वर्णन इस काव्य की प्रमुख विशेषताएं हैं. कुमारसंभव कालिदास की उत्कृष्ट कोटि की रचना हैं.

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

रघुवंश :

रघुवंश महाकाव्य कालिदास एक उत्कृष्ट कृति है। सूर्यवंशी के 30 राजाओं का इस महाकाव्य के 19 सर्गों में वर्णन किया है। रघुवंश महाकाव्य में, एक वंश के कई नायकों को एक नायक के चरित्र के आधार के रूप में चित्रित किया गया है।

रघुवंश के 19 सर्गों में सूर्यवंशी राजाओं दिलीप से राम और राम के वंशजों का चरित्र चित्रण है। इस महाकाव्य के पहले 9 सर्गों में, राम के चार पूर्वजों दिलीप, रघु, अज और दशरथ का वर्णन मिलता है और दसवें सर्ग से 15 वें सर्ग तक के 6 सर्गों में राम के जीवन वृत्त का वर्णन है।[4]

16 वें सर्ग से 18 वें सर्ग तक के चार सर्गों में राम के वंशजों का वर्णन मिलता हैं। 19 वें सर्ग में कामुक अग्निवर्ण का वर्णन मिलता हैं। इस काव्य में सभी रसों का सुंदर वर्णन है। रघु और राम के युद्ध कथाओं में, जहाँ वीर रस का चित्रण किया गया है, वहां आर्त विलाप में करुण रस की अजस्र धारा प्रवाहित होती हैं।

रघु वंश में कवि द्वारा एक से एक सुंदर आदर्श प्रस्तुत किए गए हैं। रघुवंश के पास रघु के बेटे अज की इंदुमती से शादी, इंदुमती की मृत्यु और अज के करुण विलाप, राम और सीता के पुष्पक विमान द्वारा प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन आदि का एक आकर्षक चित्रण है।

प्रकृति के प्रति कालिदास का दृष्टिकोण कभी भी मानव केन्द्रित नहीं रहा है। उनके अनुसार प्रकृति और मनुष्य के बीच एक सच्चा रिश्ता होता है। अपनी रचनाओं में प्रकृति का वर्णन करना कालिदास की विशेषता रही है। उनकी रचना अभिज्ञान शाकुन्तलम् में यह सर्वाधिक सुस्पष्ट होता है। इस नाटक में, शकुंतला (राजा दुष्यन्त की पत्नी और भारत के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका अप्सरा की कन्या) आश्रम के सभी पेड़ों, लताओं और जानवरों को मनुष्यों की की भांति प्रेम करती है। नाटक का अध्याय४ दिखाता है कि कैसे ये सभी भी शकुंतला की विदाई पर अत्यंत दुखी हो जाते हैं। शकुंतला गर्भवती हिरनी के बारे में भी बहुत चिंतित होती हैं। रबीन्द्रनाथ टैगोर ने भी कालिदास के प्रकृति प्रेम की प्रशंसा की है, और इसके बारे में बहुत कुछ विस्तार से लिखा है।[5]

कई अन्य साहित्यकारों की भांति कालिदास भी हमेशा स्त्री की गरिमा के प्रति संवेदनशील रहे हैं। इनकी रचनाओं में शकुन्तला, इरावती, धारिणी, यक्ष की अनाम पत्नी जैसी नायिकाएँ सभी अविस्मरणीय हैं। अभिज्ञान शाकुन्तलम्, चिंता, अलगाव और पुनर्मिलन का एक अनूठा नाटक है। नाटक की कहानी मूल रूप से राजा दुष्यंत एवं शकुंतला के प्रेम के इर्द गिर्द घूमती है। शकुंतला एक दिव्य अप्सरा मेनका की बेटी है, जिसे उसकी माँ उसके जन्म के बाद, एक जंगल में कण्व ऋषि के आश्रम के निकट छोड़ देती है। इस परित्यक्त बच्ची, 'शकुंतला' को शकुंत पक्षी (जंगल में मोर) द्वारा बचाया जाता है। इसलिए भी उसे शकुंतला कहा जाता है। ऋषि कण्व इस परित्यक्त बच्ची को अपने आश्रम में ले जाते हैं, जहाँ वह प्रकृति की गोद में पलती और बड़ी होती है। यहां पर जंगल के पक्षी, जानवर और साधु ही उसके संगी साथी होते हैं। वह मासूमियत और प्रकृति का भी प्रतीक है।[6]
पहले अध्याय में, शकुंतला आदर्श नारीत्व के एक आदर्श अवतार के रूप में दिखाई देती हैं। उसके सौन्दर्य की तुलना केवल प्रकृति से ही की जा सकती है। शकुंतला और प्रकृति अपने गुणों में एक दूसरे का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसका व्यक्तित्व प्रकृति के साथ उसके सामंजस्य में ही निहित होता है।

कालिदास की अन्य नायिकाएँ जैसे उर्वशी और मालविका आदि विलासिता भरा जीवन जीती हैं लेकिन शकुंतला, प्रकृति की संतान होती हैं। उसे प्रकृति ने पाला है, प्रकृति ही उसके मनो-यौन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब भी शकुंतला नाटक में प्रकट होती है, प्रकृति अपने विभिन्न रूपों में उसके साथ होती है। उसके स्थायी साथी जंगल में पक्षी, जानवर और पौधे होते हैं जिनके साथ उसने मानवीय संबंध स्थापित कर लिए हैं और वह उन्हें अपने सगे-संबंधियों के रूप में बुलाती है। उसने अपने पालतू जानवरों को नाम भी दिए हैं।
वह आश्रम में चमेली की झाड़ी को 'वंज्योत्सना' और एक मृग-शिशु को 'दीरघ पंगा' कहती है। वह प्रतिदिन पौधों को पानी देती है और अपने पालतू जानवरों को भोजन खिलाती है। फिर उसके बाद ही वह स्वयं भोजन ग्रहण करती है। उसके वृक्षों से कोई भी फूल नहीं तोड़ सकता। जब बगीचे में फूल खिलते हैं, तो यह उसके लिए उत्सव का अवसर होता है। यहां तक कि वनस्पति और जीव-जंतु भी शकुंतला के आनंद में उसके सहभागी बन जाते हैं। कालिदास जब भी शकुंतला के सौन्दर्य का वर्णन करते हैं, तो वे प्रकृति से चित्र उधार लेते हैं। अर्थात शकुंतला की तुलना अक्सर फूल या नाजुक पौधे से की जाती है। वह अपनी लता बहन वंज्योत्सना की शादी भी एक आम के पेड़ से कर देती है। एक छोटा सा शावक हर समय उसका पीछा करता रहता है।[7]

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

परिणाम

मालविकाग्निमित्र :

यह कालिदास द्वारा रचित एक नाटक है। इसमें पाँच अंक हैं जो पुष्यमित्र के पुत्र, शुंगवंश के संस्थापक और मालविका के प्रेम की उन्नति का वर्णन करते हैं। यह कवि का पहला नाटक है, इसलिए इसमें काव्यात्मक कौशल का सबसे बड़ा रूप उपलब्ध नहीं है, फिर भी यह नाट्य कला के दृष्टिकोण से एक बहुत ही सुंदर रचना है।

विक्रमोर्यवशियम् :

कालिदास की नाट्यकला सम्बन्धी विकास की द्रष्टि से इस नाटक का दूसरा स्थान है। यह पांच अंकों का नाटक पुरुरवा उर्वशी की प्रसिद्ध पौराणिक कथा को बताता है। इसमें कवि ने पुरुरवा और उर्वशी के मूल प्रेम को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है।[8]

अभिज्ञानशाकुन्तलम् :

यह संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक हैं। भारतीय परम्परा इस नाटक को संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ नाटक मानती हैं काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला इसकी कथा महाभारत से ली गई हैं। इसमें सात अंक हैं।

यह हस्तिनापुर और शकुंतला के राजा दुष्यंत के प्रेम, वियोग और पुनर्मिलन की कहानी बयान करता है। इसमें श्रृंगार और करुण रस का सुंदर निष्पादन है। कालिदास का यह नाटक नाट्यशास्त्र का सबसे अच्छा उदाहरण है। नाटक का चैथा अंक सबसे अच्छा है। कवि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस नाटक का प्रत्येक पात्र चरित्र की दृष्टि से आदर और सम्मान के योग्य है, इसमें कविता की कोमलता, भावनाओं की गहराई और उदात्तता आदि का सुंदर समावेश है।

कालिदास अपनी विषय-वस्तु देश की सांस्कृतिक विरासत से लेते हैं और उसे वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के अनुरूप ढाल देते हैं। उदाहरणार्थ, अभिज्ञान शाकुन्तल की कथा में शकुन्तला चतुर, सांसारिक युवा नारी है और दुष्यन्त स्वार्थी प्रेमी है। इसमें कवि तपोवन की कन्या में प्रेमभावना के प्रथम प्रस्फुटन से लेकर वियोग, कुण्ठा आदि की अवस्थाओं में से होकर उसे उसकी समग्रता तक दिखाना चाहता है। उन्हीं के शब्दों में नाटक में जीवन की विविधता होनी चाहिए और उसमें विभिन्न रुचियों के व्यक्तियों के लिए सौंदर्य और माधुर्य होना चाहिए।[7]

त्रैगुण्योद्भवम् अत्र लोक-चरितम् नानृतम् दृश्यते।
नाट्यम् भिन्न-रुचेर जनस्य बहुधापि एकम् समाराधनम्।।

कालिदास के जीवन के बारे में हमें विशेष जानकारी नहीं है। उनके नाम के बारे में अनेक किवदन्तियां प्रचलित हैं जिनका कोई ऐतिहासिक मूल्य नहीं है। उनकी कृतियों से यह विदित होता है कि वे ऐसे युग में रहे जिसमें वैभव और सुख-सुविधाएं थीं। संगीत तथा नृत्य और चित्र-कला से उन्हें विशेष प्रेम था। तत्कालीन ज्ञान-विज्ञान, विधि और दर्शन-तंत्र तथा संस्कारों का उन्हें विशेष ज्ञान था।

उन्होंने भारत की व्यापक यात्राएं कीं और वे हिमालय से कन्याकुमारी तक देश की भौगोलिक स्थिति से पूर्णतः परिचित प्रतीत होते हैं। हिमालय के अनेक चित्रांकन जैसे विवरण और केसर की क्यारियों के चित्रण (जो कश्मीर में पैदा होती है) ऐसे हैं जैसे उनसे उनका बहुत निकट का परिचय है।[6]

जो बात यह महान कलाकार अपनी लेखिनी के स्पर्श मात्र से कह जाता है, अन्य अपने विशद वर्णन के उपरांत भी नहीं कह पाते। कम शब्दों में अधिक भाव प्रकट कर देने और कथन की स्वाभाविकता के लिए कालिदास प्रसिद्ध हैं। उनकी उक्तियों में ध्वनि और अर्थ का तादात्मय मिलता है। उनके शब्द-चित्र सौन्दर्यमय और सर्वांगीण सम्पूर्ण हैं, जैसे द एक पूर्ण गतिमान राजसी रथ (विक्रमोर्वशीय, 1.4), दौड़ते हुए मृग-शावक (अभिज्ञान-शाकुन्तल, 1.7), उर्वशी का फूट-फूटकर आंसू बहाना (विक्रमोर्वशीय, छन्द 15), चलायमान कल्पवृक्ष की भांति अन्तरिक्ष में नारद का प्रकट होना (विक्रमोर्वशीय, छन्द 19)। उपमा और रूपकों के प्रयोग में वे सर्वोपरि हैं।[5]

ISSN: 2395-7639

IJMRSETM

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

सरसिजमनुविद्धं शैवालेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमिधकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

'कमल यद्यपि शिवाल में लिपटा है, फिर भी सुन्दर है। चन्द्रमा का कलंक, यद्यपि काला है, किन्तु उसकी सुन्दरता बढ़ाता है। ये जो सुकुमार कन्या है, इसने यद्यपि वल्कल-वस्त्र धारण किए हुए हैं तथापि वह और सुन्दर दिखाई दे रही है। क्योंकि सुन्दर रूपों को क्या सुशोभित नहीं कर सकता ?'

कालिदास की रचनाओं में सीधी उपदेशात्मक शैली नहीं है अपितु प्रीतमा पत्नी के विनम्र निवेदन सा मनुहार है। मम्मट कहते हैं: 'कान्तासम्मिततयोपदेशायुजे।' उच्च आदर्शों के कलात्मक प्रस्तुतीकरण से कलाकार हमें उन्हें अपनाने को विवश करता है। हमारे समक्ष जो पात्र आते हैं हम उन्हीं के अनुरूप जीवन में आचरण करने लगते हैं और इससे हमें व्यापक रूप में मानवता को समझने में सहायता मिलती है।[4]

कालिदास के समृद्ध और उज्ज्वल व्यक्तित्व को एक महान सांस्कृतिक विरासत द्वारा चिह्नित किया गया है और उन्होंने अपने कार्यों में मुक्ति, व्यवस्था और प्रेम के आदर्शों को अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने व्यक्ति को दुनिया के दुखों और संघर्षों से अवगत कराने के लिए प्यार, वासना, इच्छा-आकांक्षा, आशा-सपना, सफलता, असफलता आदि की अभिव्यक्ति दी है। भारत ने अपनी समग्रता में जीवन को देखा है और इसमें किसी भी विखंडन का विरोध किया है।

कवि ने आत्मा को विभाजित करने वाले मानसिक द्वंद्व का वर्णन किया है और इस प्रकार हमें इसे समग्रता में देखने में मदद मिली है।[3]

कालिदास की रचनाएँ हमारे लिए सुंदरता, साहसिक घटनाओं, त्याग के दृश्यों और मानव मन की बदलती स्थितियों के लिए संरक्षित करती हैं। उनके कार्यों को हमेशा मानव भाग्य के एक अवर्णनीय चित्रण के लिए पढ़ा जाएगा, क्योंकि केवल एक महान कवि ही ऐसी प्रस्तुतियां दे सकता है। उनकी अनेक पंक्तियां संस्कृत में सूक्तियां बन गई हैं। उनका मानना है कि हिमालयी क्षेत्र में विकसित संस्कृति दुनिया की संस्कृतियों का मानक हो सकती है। यह संस्कृति मूलतः आध्यात्मिक है। हम सभी समय चक्र में कैद हैं और इसीलिए हम अपने अस्तित्व की संकीर्ण सीमा में ही सीमित हैं। इसलिए, हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि हम अपने प्रलोभनों से छुटकारा पाएं और चेतना की उस सच्चाई को प्राप्त करें जो देश-युग से परे है जो अजन्मा, चरम और कालातीत है। हम इसका चिंतन नहीं कर सकते, इसे वर्गों, आकारों और शब्दों में विभाजित कर सकते हैं। इस चरम सत्य का ज्ञान मानव का उद्देश्य है। रघुवंश के इन शब्दों को देखिए - 'ब्रह्माभूयम् गतिम् अजागम्।' ज्ञानीपुरुष कालातीत परम सत्य के जीवन को प्राप्त होते हैं।[2]

वह जो चरम सत्य है सभी अज्ञान से परे है और वह आत्मा और पदार्थ के विभाजन से ऊपर है। वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। वह अपने को तीन रूपों में व्यक्त करता है (त्रिमूर्ति) ब्रह्मा, विष्णु और शिव द्द कत्र्ता, पालक तथा संहारक। ये देव समाज पद वाले हैं आम जीवन में कालिदास शिवतंत्र के उपासक हैं। तीनों नाटकों द्द अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र द्द की आरम्भिक प्रार्थनाओं से प्रकट होता है कि कालिदास शिव-उपासक थे। देखिए रघुवंश के आरम्भिक श्लोक में:

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती-परमेश्वरौ।

यद्यपि कालिदास परमात्मा के शिव रूप के उपासक हैं, उनका दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं है। परम्परागत हिन्दू धर्म के प्रति उनका दृष्टिकोण उदार है। वह दूसरों की मान्यताओं को सम्मान के साथ देखता था। कालिदास में सभी धर्मों के प्रति सहानुभूति है और वह शातिरता और कट्टरता से मुक्त है। कोई भी व्यक्ति उस मार्ग को चुन सकता है जो अच्छा लगता है क्योंकि अंततः भगवान के विभिन्न रूप एक ही भगवान के विभिन्न रूप हैं जो सभी रूपों में निराकार हैं।

कालिदास पुनर्जन्म के सिद्धांत का पालन करते हैं। यह जीवन में पूर्णता के मार्ग का एक चरण है। जिस तरह हमारा वर्तमान जीवन पिछले कर्मों का फल है, उसी तरह हम इस जन्म में प्रयासों से अपने भविष्य को बेहतर बना सकते हैं। विश्व पर सदाचार का शासन है। विजय अन्ततः अच्छाई की

IJMRSETM

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 9, September 2018

होगी। यदि कालिदास की रचनाएँ दर्दनाक नहीं हैं तो उसका कारण यह है कि वह सद्भाव और शालीनता के अंतिम सत्य को स्वीकार करते हैं। इस विश्वास के तहत, वे ज्यादातर पुरुषों और महिलाओं के दुखों के लिए हमारी सहानुभूति को मोड़ देते हैं।[1]
कालिदास के लेखन ने इस भ्रांति को दूर किया कि हिंदू मन ने ज्ञान और ध्यान पर अधिक ध्यान दिया और सांसारिक दुखों की उपेक्षा की। कालिदास के अनुभव का क्षेत्र विस्तृत था। उन्होंने समान रूप से जीवन, लोक, चित्रों और फूलों का आनंद लिया। उसने मनुष्य को सृष्टि (ब्रह्मांड) और धर्म की शक्तियों से अलग नहीं देखा। उन्हें सभी प्रकार के मानवीय दुखों, आकांक्षाओं, क्षणिक खुशी और अंतहीन आशाओं का ज्ञान था।[8]

निष्कर्ष

कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी प्रतिभा सर्वांगीण है। महाकाव्य, नाटक और गीत के सभी क्षेत्रों में उनकी रचनाएँ अद्वितीय हैं। तत्कालीन समाज की वास्तविक रूप और सांस्कृतिक चेतना की झांकी उनके कार्यों में पाई जाती है। कालीदास को दुनिया के महान काव्य साहित्कारों में गिना जाता है। उनके अन्य प्रसिद्ध नाटकों जैसे मेघदूतम और रघुवंशम आदि में भी प्रकृति के विविध रूप देखने को मिलते हैं। उनकी रचनाओं में प्रकृति का संजीव रूप में चित्रण किया गया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "कालिदास की रचनाओं में, जीवन के अविभाज्य अंग के रूप में, प्रकृति का प्रयोग कथानक को एक नई शक्ति प्रदान करता है। यह मुख्य क्रिया को ताजगी और जीवन शक्ति प्रदान करता है। उनकी रचनाओं में प्रकृति को एक पृष्ठभूमि के रूप में इस्तेमाल किया गया है।[7]

उनके नाटक मानव दुनिया और प्रकृति के बीच एकता स्थापित करते है, और अविभाजित संवेदनाओं और सार्वभौमिक संवेदनाओं के बीच एक सामंजस्य बनाते है। "कालिदास की यह रचना बताती है कि वह एक महान कवि थे और प्रकृति उनकी आत्मा थी। वह हर पहलू की प्रकृति को समझते है। वास्तव में, वे प्रकृति के कवि थे। उनकी लेखन शैली बहुत शुद्ध और सभी के मन को छूने वाली है। कालिदास का अस्तित्व साहित्य सृष्टि के अंत तक इस संसार में विद्यमान रहेगा।[8]

संदर्भ

1. रामजी उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का गंभीर इतिहास 20 जुलाई 2014)।
2. " निर्गतसु न वै कस्य कालिदासस्य सूक्तिसु। प्रीतिर्मधुर संद्रासु ...।" - बाणभट्ट, हर्षचरितम।
3. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चैखम्भा भारती अकादमी, पृ। 202
4. अच्युतानंद घिल्डियाल और गोदावरी घिल्डियाल - कालीदासा और उनका मानव साहित्य 2, 2014 जुलाई 2014
5. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चैखम्भा भारती अकादमी, पृष्ठ 19
6. एबी कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चैखम्भा भारती अकादमी, पृष्ठ 125
7. " चित्तं व्युपनोति यः क्षिप्रं शुष्काण्डनमिवनलः स प्रसादाः स्मस्तेषु रेसु रंचासु वा।"
8. " उपमा कालिदासस्य ...